कोलबोल
राष्ट्रिय फैशन टेकनोलाजी संस्थान, कोलकाता

एक संवाद

विद्याथी: महोदया, स्वामी विवेकानंद के अनुसार 'आत्मनिर्भर शिक्षा' क्या है?

शिक्षिका: यह शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है. जितना संभव हो अपना काम स्वयं करो। बचपन से ही आपको आत्मनिर्भर होने की सीख लेनी चाहिए. उदाहरण के लिए, आपको अपनी अध्ययन सामग्री, अध्ययन मेज, स्कूल की वर्दी, खिलौने और बिस्तर को खुद ही अनुशासित तरीके से रखने में अच्छी तरह व्यवस्थित होना होगा। शौचालय का उपयोग, और इसकी सफाईय भोजन करने के बाद प्लेट धोना इत्यादि, स्वयं किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, बहुत महत्वपूर्ण बात यह है कि अपनी बुद्धि का उपयोग करके अपना खुद का अध्ययन पूरा करें। अपने घर पर, अपने माता–पिता के साथ कुछ घरेलू काम करें, जो भी आप कर सकते हैं। यह आत्मनिर्भर शिक्षा आपके भविष्य के जीवन की सभी बाधाओं और जटिलताओं को दूर करना सुनिश्चित करेगी। जैसा कि स्वामीजी ने कहा "जूते साफ करने से लेकर पवित्र किताबों के अध्ययन", आपको सब कुछ सीखना है। याद रखें कि कोई काम छोटा और महत्वहीन नहीं है।

विद्याथी: महोदया, यही कारण है कि स्वामीजी ने कहा कि ष्दुनिया की सारी संपत्ति एक छोटे से भारतीय गांव की मदद नहीं कर सकती है, अगर लोग खुद अपनी मदद करना नहीं सीखते है।"

शिक्षिका: हाँ, यह स्वामी विवेकानंद की एक सुंदर उक्ति है और आपके द्वारा सही मायने में इंगित की गई है। स्वामीजी चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति और हमारा देश पूरी तरह से आत्मनिर्भर हो जाए। अपने कई पत्रों में स्वामीजी ने आत्मनिर्भर बनने की आवश्यकता पर बल दिया है। मेरा सुझाव है कि आप स्वामीजी का लिखा पत्र पढ़े जो स्वामीजी ने जापान से अमेरिका जाने के रास्ते में ,अलासिंघा पेरुमल को लिखा था।

शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करें.

कोई भी आजादी तब तक सच्ची नहीं होती है, जब तक उसे पाने वाले लोगों को विचारों को व्यक्त करने की आजादी न दी जाये.

शिक्षा का परिणाम एक मुक्त रचनात्मक व्यक्ति होना चाहिए, जो ऐतिहासिक परिस्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ लड़ सके.

ज्ञान के माध्यम से हमें शक्ति मिलती है. प्रेम के जरिये हमें परिपूर्णता मिलती है.

शांति राजनीतिक या आर्थिक बदलाव से नहीं आ सकती बल्कि मानवीय स्वभाव में बदलाव से आ सकती है.

डॉ.राधाकृष्णन

तस्वीरें छात्रों के सोजन्य से

स्वतंत्रता दिवस का रंगारंग कार्यक्रम

एनआईएफटी कोलकाता में स्वतंत्रता दिवस एक उत्साह के साथ प्रबंध किया गया एवं मनाया गया। अनिवार्य ध्वज उत्थान समारोह १०।ड को निदेशक, कर्नल सुब्रोतो विश्वास द्वारा किया गया था। संयुक्त निदेशक, श्री खुशल जांगदीद, संकाय सदस्य, कर्मचारी सदस्य और छात्र उपस्थित थे और महान उत्साह के साथ राष्ट्रीय गान गाया गया।स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए सभी चार छात्रों क्लबों ने कई कार्यक्रम आयोजित किए

सामाजिक क्लब -
नुक्कड़ नाटक - फाउंडेशन कार्यक्रम के १० छात्रों को ध्वज होस्टिंग के तुरंत बाद वरिष्ठ नुक्कड़ नाटक टीम द्वारा प्रशिक्षित किया गया था। प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

रंगोली प्रतियोगिता - दो प्रतिभागी वाली छ: टीमों ने रचनात्मक रंगोली प्रतियोगिताओं में एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा की। छात्रों को पारंपरिक दृष्टिकोण लेने के बजाय मिश्रित मीडिया रंगोली बनाने के लिए कहा गया। विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

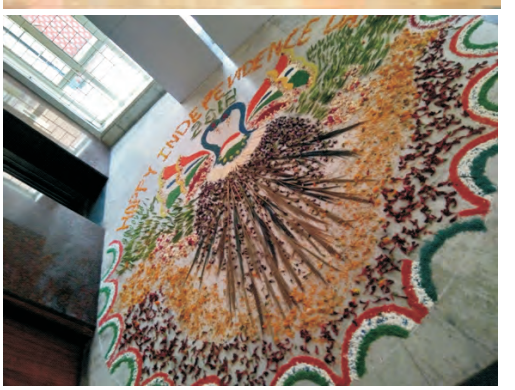

स्पोर्ट्स क्लब
वॉली बॉल मैच - ३ टीमों ने लीग मैचों में एक दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा की जो सुबह ८:३० से शुरू हुई और १:३० बजे तक चली। इस कार्यक्रम को ऊर्जा और उत्साह से खेला गया । रेड बुल इस कार्यकृम का पेय साथी था। विजेता और उपविजेता टीमों को पदक, ट्राफियां और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

रस्साकशी- एनआईएफटी कोलकाता की लड़कियों और लड़कों के बीच एक दोस्ताना रस्साकशी प्रतियोगिता की गई। टीम के विजेताओं को ईक्लेयर वितरित किए गए।

सांस्कृतिक क्लब
सांस्कृतिक कार्यक्रम
सांस्कृतिक क्लब द्वारा एक रंगीन और देशभक्ति सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। समूह और सोलो नृत्य, समूह और सोलो गाने छात्रों द्वारा किए गए और दर्शकों से बड़ी प्रशंसा प्राप्त हुई। प्रतिभागियों को सराहना के प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया था।

साहित्यिक क्लब
वाद-विवाद - क्या भारत का फैशन सुपर पावर बनने के रास्ते पर है।
प्रतिभागियों ने भारत के फैशन उद्योग के भविष्य पर बहस की। विजेताओं को योग्यता के पुरस्कार और प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया था। सभी छात्रों को भागीदारी प्रमाणपत्र दिए गए थे।

सभी छात्रों, कर्मचारियों, संकाय और प्रशासन को खाद्य बक्से वितरित किए गए थे।